श्लोकों की व्याख्या

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:
शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तु:।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥1॥

प्रस्तुत श्लोक कालिदासविरचित मेघदूत खण्डकाव्य के पूर्वमेघ का प्रथम श्लोक है। एक किंवदन्ती के अनुसार जब विद्योत्तमा ने कालिदास के दरवाजा खोलने के निवेदन 'अनावृत्तं कपाटं देहि मे' के प्रत्युत्तर में कहा था 'अस्ति कश्चिद्वाग्विशेष:'। विद्योत्तमा के तीन शब्दों अस्ति, कश्चिद् और वाग् से कालिदास ने तीन ग्रन्थों के प्रथम श्लोक का आरंभ किया। कुमारसम्भव ग्रंथ का आरंभ 'अस्ति ----' से मेघदूत का आरंभ 'कश्चिद्--' से और रघुवंश का आरंभ 'वाग्----' से किया। मेघदूत का प्रथम श्लोक इस प्रकार 'कश्चिद्---' से आरम्भ होता है।

प्रस्तुत श्लोक में कवि ने कहा है कि कुबेर का अनुचर कोई यक्ष अपने कार्य में असावधानी बरतने के कारण कुबेर के द्वारा शापित हुआ। उस यक्ष को एक वर्ष तक अपनी पत्नी से दूर रहने का शाप मिला और पृथ्वी लोक पर शापपर्यंत निवास का आदेश मिला। इस प्रकार शापित होकर वह यक्ष भूलोक पर रामगिरि के आश्रम में

आकार रहने लगा। यह आश्रम हरे-भरे वृक्षों से घिरा था और यहाँ का जल अत्यंत ही पवित्र हो गया था क्योंकि जनकपुत्री सीताजी ने वनवास के काल में यहाँ के जल में स्नान किया था। अतः यह स्थान एक तीर्थ की भांति पवित्र हो गया था। कवि ने इस श्लोक में कई बातों पर प्रकाश डाला है। कवि के अनुसार अपने कर्त्तव्य में असावधानी अथवा प्रमाद नहीं करना चाहिए। मनुष्य को कर्त्तव्य से च्युत होना दंड का भागी बनाता है। यक्ष ने अपनी पत्नी में अतिशय प्रेम के कारण कर्त्तव्यहीनता की अतः दंडस्वरूप उसको पत्नी से वियोग सहना पड़ा। शापित अथव दंडित व्यक्ति की महिमा या सम्मान धूमिल हो जाता है। उसका मान-सम्मान सब कुछ नष्ट हो जाता है। अतः शापित यक्ष रामगिरि के आश्रम में आकर अपने शाप की अवधि को बिताता है। कवि ने रामगिरि के जल को पवित्र बताया है क्योंकि वनवास के समय सीताजी ने वहाँ स्नान किया था। इस वर्णन से कवि ने श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के वनगमन के पड़ाव रामगिरि में यक्ष को लाकर एक साम्य दिखाने का प्रयास किया है। उनका वनगमन भी एक प्रकार का दण्ड था जो उनकी सौतेली माता की इच्छा व दबाव से पिता के द्वारा दिया गया था। यक्ष भी दंडित होकर उसी स्थान पर आता है। पुनः श्रीराम यहाँ सपत्नीक आए थे किन्तु यक्ष अपनी पत्नी से वियुक्त होकर इस स्थान पर आया है अतः सीताजी का वर्णन कर कवि ने यक्ष की भार्या से विरह को भी और बढ़ा दिया है। रामगिरि में हरे-भरे वृक्षों का वर्णन कर कवि ने आरम्भ में ही यह संकेत दे दिया है कि पाठकों को प्रकृति के चित्रण का भरपूर आनन्द इस काव्य में आगे जाकर मिलेगा।

तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्त: स कामी
नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठ:।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीड़ापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श ॥ 2॥

प्रस्तुत श्लोक कालिदासविरचित मेघदूत खण्डकाव्य के पूर्वमेघ से लिया गया है। इस श्लोक में कवि ने पत्नी से वियुक्त यक्ष का कारुणिक वर्णन किया है। कवि कहता है कि यक्ष अपनी पत्नी के विरह में अत्यंत दुबला हो गया है। उसके दुबलेपन का प्रमाण यह है कि उसके हाथ के सोने के कड़े खिसककर नीचे आ गए हैं। इसी अवस्था में उस प्रेमी यक्ष ने रामगिरि के पहाड़ों पर आठ महीने व्यतीत कर दिया। आठ माह बीतने के बाद आषाढ़ का महीना और हरिशयनी एकादशी आ गयी। उस दिन उसने पहाड़ की चोटी से लगे हुए काले मेघ को देखा। उस श्याम मेघ को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कोई काला हाथी अपने तिरछे दांतों से प्रहार कर मिट्टी उखाड़ रहा हो। इस श्लोक में आषाढ़ मास के प्रथम दिवस का वर्णन है जो निश्चय ही एकादशी किसी माह का पहला दिन नहीं होती। अतः यहाँ प्रथम दिवस का अर्थ प्रधान या मुख्य करना समीचीन होगा। आषाढ़ माह की हरिशयनी एकादशी उस माह का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दिवस होता है। यही कारण है कि कवि ने इस दिवस को प्रथम अर्थात् प्रमुख दिन माना है।